RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारतीय वैदिक इतिहास परम्परा

डॉ0 ऋत्विक कुमार ओझा

इतिहास विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

वेद धार्मिक ग्रन्थ है और इतिहास तथा भूगोल से उनका कोई भी सम्बन्ध नहीं है। पर उनमें कुछ ऐसे शब्द अवश्य है जो भारत के पर्वतों नदियों तथा प्रदेशों के पुराने नाम थे। ऐतिहासिकों ने इससे यह परिणाम निकाला है कि जिस समय वेदमंत्रो की रचना हुई आर्य लोग भारत में आकर बसना शुरू कर चुके थे और पंजाब आदि उत्तर–पश्चिमी प्रदेशों में उनके अनेक राज्य भी स्थापित हो गये थे। ऐतिहासिकों के मत के अनुसार वैदिक संहिताओं में ऋग्वेद सबसे पुराना है और अन्य वेदों की रचना उसकी तुलना में बाद के काल में हुई थी। यही कारण है जो ऋग्वेद में मध्य पूर्वी तथा दक्षिणी भारत की नदियों पर्वतों व प्रदेशों के नाम नहीं पाये जाते यद्यपि अन्य वेदों में इन क्षेत्रों के भौगोलिक नामों का भी उल्लेख विद्यमान है। ऋग्वेद के काल में आर्य लोग पूर्वी तथा दक्षिणी भारत में दूर तक आगे नही बढे थे। बाद में दूर–दूर तक के प्रदेशों में उनका प्रसार होता गया और वहॉ के पर्वतें तथा नदियों आदि से भी उनका परिचय हुआ। बाद के वैदिक साहित्य में उनका भी उल्लेख पाया जाता है।

ऋग्वेद में केवल हिमालय पर्वत का उल्लेख है। विन्ध्याचल, सहाद्रि, महेन्द्र आदि किसी अन्य पर्वत का नाम इस वेद में नही पाया जाता । मूजवन्त नामक एक अन्य पर्वत शिखर का ऋग्वेद में उल्लेख है और उसके विषय में यह कहा गया है कि वहॉ साम प्रचुरता से उत्पन्न होता है। इस पर्वत शिखर की सता काश्मीर के क्षेत्र में थी।

ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में समुद्र का भी उल्लेख आया है जिससे यह सहज में अनुमान किया जा सकता है कि वैदिक आर्य भारत में समुद्र तट के प्रदेशों में भी आबाद हो चुके थे और समुद्र मार्ग द्वारा सुदूरवर्ती प्रदेशों में व्यापार के लिए भी जाने–आने लग गए थे। ऋग्वेद के एक मन्त्र में दो समुद्रो का उल्लेख किया गया है पूर्वी समुद्र और अपर (पश्चिमी) समुद्र। ऋग्वेद में अश्विनों द्वारा तुग्र भुज्य के समुद्र से उद्धार का वर्णन है जिसके लिए सौ चुप्पुओं वाली नौका का प्रयोग किया गया था। इस प्रकार के निर्देशों के आधार पर यह कल्पना करना असंगत नहीं होगा कि वैदिक युग के आर्य समुद्र से भलीभांति परिचित थे और उसमें जाने–आने के लिए विशालकाय नौकाओं का भी प्रयोग करने लग गए थे। इस प्रकार प्राचीन वैदिक युग में अफगानिस्तान काश्मीर तथा उत्तर में रसा नदी से लगाकर पंजाब, हरियाणा और गंगा–यमुना सरयू नदियों तक के प्रदेश उस क्षेत्र के अन्तर्गत थे जहाँ आर्यो ने अपनी बस्तियॉ बसा ली थी। साथ ही सरस्वती तथा सिन्ध जैसी नदियों द्वारा वे समुद्र तक भी पहुॅचने लग गए थे। यह ऊपर लिखा ही जा चुका है कि वैदिक साहित्य में सरस्वती नदी का जिस प्रकार से वर्णन किया गया है उससे प्रतीत होता है कि उस काल ने सरस्वती भी एक बहुत बडी नदी थी जो सिन्ध के समान सीधी समुद्र में जाकर गिरती थी।

ऋग्वेद में सप्तसिन्धु का भी उल्लेख मिलता है जो सम्भवतः किसी प्रदेश या देश के लिए प्रयुक्त किया गया है। यह तो स्पष्ट ही है कि सप्तसिन्धु से ऐसा देश ही अभिप्रेत है जो सात नदियों द्वारा सिंचित था। पर ये सात नदियॉ कौन सी थी इस प्रश्न पर विद्वानों में मतभेद है। मैक्समूलर के मत में ये नदियॉ सतलुज सरस्वती व्यास रावी चनाव जेहलम और सिन्धु थी। पर कतिपय अन्य विद्वानों ने यह प्रति पादित किया है कि इन सात नदियों में कुभा (काबुल) और रसा को भी अन्तर्गत किया जाना चाहिए। इन विद्वानों के अनुसार सप्तसिन्धु से अफगानिस्तान और पंजाब का क्षेंत्र अभिप्रेत था वह प्रदेश नहीं जिसमें कि सरस्वती नदी प्रवाहित होती थी। यह भरोसे के साथ कहा जा सकता है कि प्राचीन वैदिक युग में आर्यो का प्रधान केन्द्र भारत उपमहाद्वीप के उतर–पश्चिमी प्रदेशों में था और इन्ही को सप्तसिन्धु भी कहा जाता था।

ऋग्वेद में उन बहुत से जनों (कबीलो) का उल्लेख मिलता है जिनमें कि वैदिक युग के आर्य विभक्त थे। इन जनों का सगंठन परिवार के नमूने पर होता था और एक जन के सब व्यक्ति सजात सनाभि या एक जाति या एक वंश के समझे जाते थे। अपने जन को वे स्व कहते थे और दूसरे जनों के व्यक्तियो को अन्यनाभि या भ्रण । वैदिक युग के राज्यों का आधार ये जन ही होते थे क्योकि एक राज्य में प्राय एक ही जन के व्यक्तियों का निवास होता था। इसीलिए इन राज्यों को जनपद व जानराज्य कहा जाता था।

ऋग्वेद के युग में भारत के आर्य जिन विविध जनों में विभक्त थे उनका परिचय प्राप्त करने के लिए वे सूक्त बहुत उपयोगी है जिनमें कि राजा सुदास के साथ लड़े गए दस राजाओं के युद्ध का वर्णन है। सुदास भरत वंश में उत्पन्न हुआ था और उसका राज्य पहले उस प्रदेश में विद्यमान था जिसे स्मृति ग्रन्थों में ब्रह्मावर्त्त नाम से कहा गया है। सुदास का पुरोहित विश्वामित्र था जो कुशिक कुल का था। विश्वामित्र के पौरोहित्य में सुदास ने शुतुद्री और विपाशा नदियों के प्रदेश में अनेक विजय प्राप्त की थी। पर बाद में सुदास ने विश्वामित्र के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्थान पर वशिष्ठ को अपना पुरोहित नियत किया। इससे विश्वामित्र बहुत युद्ध हुआ और उसने सुदास के विरूद्ध दस राजाओं की शक्ति को संगठित कर उन्हें उस पर आक्रमण कर देने को प्रेरित किया । इसी युद्ध को ऋग्वेद में दाशराज कहा गया है। सुदास के विरूद्ध जिन जनों या जानराज्यों के राजाओं ने संगठन बनाया था उनके नाम ऋग्वेद के अनुसार निम्नलिखित है – पुरू यदु तुर्वश अनु द्रुह्यु अलिन पक्थ भलानस विशाणी और शिव।[13] सुदास के विरूद्ध यह दाशराज्ञ शुद्ध परूष्णी (रावी) नदी के तट पर लड़ा गया था और इसमें सुदास की विजय हुई थी और पुरू राजा सवंरण ने युद्ध में परास्त होकर सिन्ध नदी के तटवर्ती एक दुर्ग में आश्रय ग्रहण किया था।

इतिहास के आधुनिक विद्धान् यह मानते है कि चारों वैदिक संहिताओं की रचना एक ही समय में नहीं हुई थी। उनके मत में ऋग्वेद का काल बहुत पुराना है और अन्य तीनों वेदों का निर्माण बाद के समय में हुआ था। जिस युग में यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद ब्राह्मण ग्रन्थ आरण्यक उपनिषद् और सूत्र ग्रन्थ बने उसे ऐतिहासिक लोग उत्तर वैदिक युग कहते है । इस साहित्य के आधार पर वे यह प्रतिपादित करने का प्रयत्न करते है कि भारत में आर्यो का प्रसार किस प्रकार हुआ और कैसे अनके विविध जन पूर्व तथा दक्षिण दिशाओं में अग्रसर होकर अपनी नई बस्तियॉ व राज्य कायम करने में तत्पर हुए।

ऋग्वेद के समय भारतीय आर्यो में यदु, पुरू, तुर्वष और द्रुहा ये पञ्चजन प्रधान थे और इनका निवास मुख्यतया हरियाण और पंजाब के क्षेत्र में था। पर सुदास की विजयों के कारण भरत जन की शक्ति बहुत बढ़ गई थी और पुरू–भरत–त्रित्सु से मिलकर एक शक्तिशाली जनराज्य का विकास हो गया था – जिसे कुरू कहते थे। उत्तर–वैदिक काल के कार्य राज्यों में यह कुरू राज्य सर्वप्रधान था। अथर्ववेद में राजा परीक्षित का उल्लेख है जिसे कौरव्य कहा गया है, और उसके राज्य की सुख–समृद्धि का बड़े उल्लास के साथ वर्णन किया गया है। उत्तर–वैदिक युग के साहित्य में परीक्षित के वंशज जनमेजय का भी उल्लेख मिलता है और उसके सम्बन्ध में यह कहा गया है कि उसने आसन्दीवत में अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया था। सम्भवतः आसन्दीवत ही बाद में हस्तिनापुर नाम से प्रसिद्ध हुआ था। ब्राह्मण ग्रन्थों में प्राय कुरू के साथ पंञ्चाल का भी उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद के समय इसे किवि कहा जाता था और कार्य जनपदों में उसका महत्वपूर्ण स्थान नही था। पर उत्तर–वैदिक युग में कुरू के समान पंञ्चाल ने भी बहुत प्राप्त लिया था। उसके राजा कैव्य और शोण सात्रासाह ने अश्वमेध यज्ञ किए थे और राजा दुर्मुख ने सम्पूर्ण पृथिवी को जीतकर अपने अधीन कर लिया था। उपनिशदों में पञ्चाल के राजा प्रवाहण जाबाली की कथा दी गई है जो परम विद्धान् तथा दार्शनिक था और जिसकी राजसभा में दूर दूर से ब्राह्मण एवं ऋषि मुनि एकत्र होकर तत्व चिन्तन किया करते थे। उत्तर–वैदिक काल में कुरू और पञ्चाल आर्य धर्म कर्मकाण्ड और तत्व चिन्तन के महत्वपूर्ण केन्द्र थे और इसके ब्राह्मण विदेह आदि सुदूरवर्ती जनपदों के राजाओं द्धारा भी आदर पूर्वक अपनी–अपनी राजसभाओं में आमंत्रित किए जाते थे। बाद के समय में पञ्चाल जनपद दो भागों में विभक्त हो गया था उत्तर पञ्चाल (राजधानी अहिच्दत्र) और दक्षिण पञ्चाल (राजधानी काम्पिल्य) पर पञ्चाल का यह विभाजन सम्भवत उत्तर वैदिक युग तक नही हुआ था।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. वाचस्पति गैरौला : संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ0 229।
2. पॉलटिकल हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग–1 ऐडिसन, पृ0 27–29।
3. द्र0 **इण्डियन हिस्टारिकल क्वार्टरली,** 1935, पृ0 568।
4. द्र0 कीथ, **ए हिस्टरी ऑफ संस्कृत लिटरेचर,** ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1920 पृ0 147।
5. द्र0 फ्रावाल्नर, **अर्लिएस्ट विनय एण्ड द बिगनिंग्स ऑफ बुद्धिस्ट लिटरेचर,** रोमा 1956, पृ0 51।
6. द्र0 गिरजाशंकर प्रसाद मिश्र, **दी ए ऑफ विनय,** प्रथम अध्याय।

RRIJM 2015, All Rights Reserved